Vijay Kumar Jha
Asso prof
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar

Degree Part III

Paper - VI

Anglo Maratha Relation.

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारत में मराठा शक्ति का प्रभुत्व कायम हो गया। अंग्रेज इस बात से अच्छी तरह परिचित थे कि उस समय भारत में मराठा शक्ति से ही चुनौती दे सकती है। अतः मराठों से अंग्रेजों का सम्पर्क होना स्वाभाविक था। 1772 ई० में पेशवा माधवराव प्रथम के मृत्यु के बाद मराठा संघ में फूट पड़ गई। इससे अंग्रेजों को मराठा के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया। इसके परिणाम स्वरूप 1775 ई० में मराठों और अंग्रेजों के बीच युद्ध छिड़ गया।

1775 ई० में अंग्रेजों और मराठों के बीच प्रथम युद्ध शुरु हुआ जिसके प्रमुख कारण निम्न थे

(1) मराठों के प्रति अंग्रेजों की नीति :— वारेन हेस्टिंग्स जब गवर्नर जेनरल बनकर आया तो उसका उद्देश्य था कि अंग्रेजों के मराठा नीति पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़े तथा मराठे बम्बई पर आक्रमण नहीं कर सके अतः वारेन हेस्टिंग्स ने मराठों कि शक्ति को दमन करके अंग्रेजी कम्पनी कि शक्ति बचाना चाहता था।

(2) मराठा सरदारों कि आपसी फूट :— 1772 ई० में मराठा पेशवा माधवराव कि मृत्यु के बाद पेशवा पद के लिये संघर्ष छिड़ गया और नारायण राव पेशवा को वध करवा कर उसका चाचा रघुनाथ राव स्वयं पेशवा बन गया। किन्तु माधवराव के समर्थकों ने उसके अल्प वयस्क पुत्र को पेशवा घोषित कर दिया।

(3) राघोबा और अंग्रेजों के बीच सूरत कि संधि :— राघोबा ने नाना फड़नवीस के विरुद्ध मार्च 1775 ई० में अंग्रेजों के साथ सूरत कि संधि कर ली। जिसके अनुसार साष्टी और बेसिन अंग्रेजों को देने का वचन दिया गया। यहीं से अंग्रेजों एवं मराठा का सीधा सम्पर्क कायम हुआ इस वजह से

Scanned with Can

अंग्रेजों ने रघुनाथ राव को सैनिक सहायता देने का वचन दिया। अंग्रेज सालसेट एवं बेसिन प्रदेश के कुछ राजस्व देने कि बात मान ली।

(1) 18 मई 1775 सूरत कि संधि के अनुसार बम्बई कि सरकार ने एक शक्तिशाली सेना रघुनाथ राव कि मदद के लिये पूना भेज दिया। 18 मई 1775 ई॰ को अंग्रेजो और मराठों के बीच प्रथम मराठा युद्ध हुआ जिसमे मराठा पराजित हुऐ। कलकत्ता कौंसिल ने बिना आदेश लिये सूरत कि संधि किया गया था अतः रद्द घोषित कर दिया अंग्रेज इस समय मराठा से लम्बे संघर्ष मे उलझना नहीं चाहता था।

(2) पुरन्धर कि संधि :— सूरत कि संधि रद्द होने के पश्चात कलकत्ता कौंसिल ने अपना प्रतिनिधि पूना भेजा। मार्च 1776 ई॰ को नाना फड़नवीस के साथ अंग्रेजों ने पुरन्दर कि संधि कर ली। संधि से निर्णय हुआ कि सालसेट अंग्रेजों के पास ही रहेगा तथा बेसीन के कुछ भाग का राजस्व अंग्रेजों को भी प्राप्त होगा। मराठा ने अंग्रेजों को युद्ध क्षतिपूर्ति के लिये 12 लाख रुपये अंग्रेजों को देगा। अंग्रेजों ने रघुनाथ राव को मदद नहीं करने का वादा किया।

(3) तेलगांव का युद्ध और बड़गाव कि संधि :— पुरन्धर कि संधि के शर्तों का पालन न अंग्रेज किया और न मराठा ही इधर ~~बंगाल~~ में इंग्लैण्ड में कम्पनी के डायरेक्टर ने कलकत्ता कौंसिल द्वारा कि गई पुरन्दर कि संधि को अस्वीकार किया। दोनों ही पक्ष संधि तोड़ने के उतावले थे अतः दोनों मे युद्ध छिड़ गया। बम्बई कि सरकार ने रघुनाथ राव को पेशवा घोषित कर दिया और अंग्रेजी सेना मराठों पर आक्रमण कर दिया 1779 ई॰ मे तेलगांव कि युद्ध मे मराठों ने अंग्रेजों को पराजित किया और 19 जनवरी 1779 ई॰ मे बड़गांव मे अंग्रेजो को मराठों से विवश होकर संधि करना पड़ा। तय हुआ कि 1773 के बाद अंग्रेजों द्वारा विजित प्रदेश मराठों के सुपुर्द कर दिया जायेगा और युद्ध क्षतिपूर्ति के लिये अंग्रेज मराठों को 41 हजार रु॰ देगा। इस संधि ने अंग्रेजों कि प्रतिष्ठा को धूमिल कर दिया।

(4) 1780-81 मे पुनः युद्ध :— वारेन हेस्टिंग्स ने बड़गांव के अपमान जनक संधि को मान्यता प्रदान नहीं किया और मराठा के विरुद्ध अंग्रेजी सेना भेज दिया और फरवरी 1780 ई॰ मे अहमदाबाद पर आक्रमण करके बड़ौदा के मराठा सरदार गायकवाड को

MAY 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Scanned with Cam

संधि करने पर नितश का दिया बेसीन पर अँग्रेजों ने अधिकार कर लिया। 1781 ई० में शिपरी के युद्ध में अंग्रेजी सेना ने सिन्धिया को पराजित किया और सिन्धिया को अंग्रेजों से संधि करनी पड़ी।

सिन्धिया के प्रयासों से मराठा और अंग्रेजों के बीच 17 मई 1782 ई० को सालबाई कि संधि हुई जिसके अनुसार सालसेट और भड़ौंच पर अंग्रेजों कि आधिनता स्वीकार कर ली गई, अंग्रेजों द्वारा मराठा के विजित प्रदेश वापस कर लिया गया। रघुनाथ राव को अंग्रेज सरकार कि तरफ से तीन लाख रु० पेंशन दिया गया।

अँग्रेज मराठा संघर्ष ने कम्पनी कि आर्थिक दशा को अत्यन्त जर्जर कर दिया। अँग्रेजों को अत्यधिक मराठों के आंतरिक फूट का पता चल गया जिसका अँग्रेजों ने पुरा फायदा उठाया। इस संधि के बाद लगभग 20 वर्षों तक अँग्रेज और मराठों के बीच शांति बनी रही। इस बीच अँग्रेजों ने अपनी शक्ति को और बढ़ाया और अपना प्रभाव बढ़ाने का अवसर मिल गया। इस संधि ने इतिहास में एक युग निर्माण का कार्य किया। इस संधि से दक्षिणी भारत में अँग्रेजों कि सत्ता सर्वोपरि हो गया। इस संधि ने भारत में अंग्रेजों के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुआ अँग्रेजों का भारत में प्रभुत्व स्थापित कर दिया।

1803 ई० में पुनः अँग्रेजों और भारत में द्वितीय युद्ध शुरू हुआ जिसमें मराठा सरदार सिंधिया-२ व भोंसले को निर्णायक युद्ध हुआ जिसमें दोनों कि पराजय हुई।

युद्ध के कारण :—

(1) लार्ड वेलेजली का विस्तारवादी नीति :— लार्ड वेलेजली महत्वाकांक्षी व्यक्ति था वह भारत में कम्पनी का सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना चाहता था अतः वह मराठों कि शक्ति का दमन करके भारत में अँग्रेजी सत्ता स्थापित करना चाहते थे।

(2) मराठा संघ में फूट :— फड़नवीस के मृत्योपरान्त मराठा शक्ति में फूट पड़ गई। सभी पेशवाओं ने अपना अपना हित देखकर एक दुसरे को मदद करने लगे जिससे पेशवा शक्ति क्षीण-क्षीण हो गया।

Scanned with Cam

③ बेसिन की ~~शक्ति~~ संधि और उसका महत्व :—
बेसिन की संधि के अनुसार यह निश्चित हुआ कि मौका आने पर अंग्रेज और पेशवा एक दूसरे की मदद करेगा। इस संधि के द्वारा यह निश्चित हुआ कि पेशवा अंग्रेजों के अतिरिक्त किसी दूसरे को अपने यहाँ नौकर नहीं रखेगा। पेशवा अंग्रेजों के बिना सलाह का किसी दूसरे राज्य से संधि नहीं करेगा। इस संधि के द्वारा अंग्रेजों को पश्चिम की ओर बढ़ने में मदद मिला।

पेशवा द्वारा अंग्रेजों के प्रभुत्व को स्वीकार करने के बाद से मराठा जाति क्रुद्ध हुये क्योंकि उनकी राष्ट्रीयता को बड़ा ठेस लगा था। अंग्रेजी बदला लेने कि तैयारी में लग ~~गये~~ गये। भारतवासी इस संकट की घड़ी में भी संगठित नहीं हो सके। अंग्रेजों ने भोसले को अरगाँव में पुनः पराजित किया और उत्तरी भारत में अलीगढ़, दिल्ली और आगरा को सिंधिया के चंगुल से मुक्त किया। मजबूर होकर भोसले ने भी 1803 ई० में अंग्रेजों से देवगाँव कि संधि कर ली। इस संधि से ~~क्योंकि~~ भोसले ने कटक का सूबा अंग्रेजों को दे दिया तथा वर्धा के पश्चिमी भाग पर भी अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

द्वितीय मराठा युद्ध के परिणामस्वरूप अंग्रेजों कि शक्ति तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार हुआ और मराठों के अनेक प्रदेश ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिये गये। मराठों कि शक्ति और प्रतिष्ठा जाती रही और सभी शक्तिशाली पेशवाओं का ~~की~~ क्रमशः पतन होता चला गया। मुगल साम्राज्य भी अंग्रेजों के संरक्षण में चला गया जिससे अंग्रेजी कम्पनी के प्रभाव में वृद्धि हुई

MAY 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Scanned with Cam